30 जीवविज्ञान की कक्षा में डिसेक्शन का अनुभव

अनन्या रामगोपाल

जो कक्षा जीवविज्ञान की एक सामान्य–सी कक्षा के रूप में शुरू हुई थी, जल्दी ही, डिसेक्शन करवाए जाने की खबर के फैलते ही उसका पूरा माहौल बदल गया। कक्षा में जो रोमांच फैल गया था उसे महसूस किया जा सकता था। सचमुच में डिसेक्शन! उस समय मुझे आगे जाकर शल्य चिकित्सक बनने का जुनून सवार था और इस दिशा में पहली बार हाथ आजमाने का यह मुझे अच्छा मौका लगा। एक मृत बकरे के दिल को अपने हाथों में पकड़ने का विचार: जो हालाँकि थोड़ा घिनौना तो था पर साथ ही अविश्वसनीय रूप से रोमांचक था। जैसे कि रक्त–परिसंरचरण तंत्र पहले ही पर्याप्त रोचक न रहा हो।

दिन बीतते चले गए और हम लोग धैर्यपूर्वक उस डिसेक्शन का इन्तजार करते रहे। 15 बकरों के दिल हासिल करना हमारी शिक्षक के लिए भी खासा चुनौती भरा साबित हुआ लेकिन उनके स्थानीय कसाई ने आखिरकार ने उन्हें इतने दिल उपलब्ध करा दिए और डिसेक्शन का दिन आ ही गया।

उस दिन प्रयोगशाला में दाखिल होते समय मैं इतने रोमांच से भरी हुई थी कि मेरे कदमों में एक स्वाभाविक उछाल थी। अपने सभी मित्रों के सामने यह शेखी बघारने के बाद कि मैं किस तरह से दिल का डिसेक्शन करूँगी, वह समय आ ही गया था। जिस पहली चीज ने मुझे चौंकाया वह थी उस दिल से आ रही गंध। वह खून की बिलकुल अलग और साफ समझ में आने वाली गंध थी। उसके कारण मेरा मन होने लगा था कि मैं दरवाजे से निकल कर भाग जाऊँ और डिसेक्शन के बारे में बिलकुल भूल जाऊँ। पर मैं वहीं अपनी जगह पर डटी रही और फिर बकरे के उस दिल तक पहुँची। वह गाढ़े लाल भूरे से रंग का था और जैसा मैंने सोचा था उससे छोटा था। इसमें से छोटी सफेद नलियाँ निकल रही थीं और यह वाकई एक अनोखा नजारा था। एक दिल पर तीन लोगों को काम करना था और मैंने जल्दी से कुछ मित्रों के साथ अपना दल बना लिया। हम सभी को सर्जिकल दस्ताने, छुरियाँ और सर्जिकल कैंचियाँ दी गईं और काम पर लगने को कहा गया। दस्ताने से सजे हाथों में बकरे के दिल को लिए हुए मेरी आँखों के सामने तकरीबन वे सभी यशस्वी शल्यक्रियाएँ घूम गईं जिन्हें मैं भविष्य में करने वाली थी। गंध कम हो गई और मैं सीधे उस दिल के चीरफाड़ में लग गई। इतना तो कहना ही पड़ेगा कि वह दिल बहुत घिनौना था। घिनौना और बहुत चिकना। हमें महाधमनी (दिल में से निकलने वाली अनेक सफेद नलियों में से एक) को तलाशने के लिए कहा गया और उसी के किनारे–किनारे दिल को चीर देने के निर्देश दिए गए। महाधमनी का पता लगाना कोई बहुत आसान काम नहीं था। पेय पदार्थ को घोलने वाली नली के जैसे दिखने वाले एक औजार द्वारा, जिसका सम्भवत: कोई वैज्ञानिक नाम रहा होगा, को इधर–उधर डालने और टटोलने के बाद, आखिर वह महाधमनी मिल गई और फिर सबसे पहला चीरा लगाया गया। मुझे काफी उत्कंठा थी। मैं दिल का अंदरूनी भाग देखने जा रही थी।

मुझे नहीं पता कि मुझे वहाँ ठीक–ठीक क्या दिखने की अपेक्षा थी। दिल की चीरफाड़ करना उतना आसान नहीं

था जितना मैं उसे मान रही थी। पहले तो उसे सही ढंग से पकड़ना ही हिम्मत का काम था लेकिन उस छुरी को दिल के आरपार भेदना तो अथक प्रयास सिद्ध हुआ। और जब अन्ततः मैंने छुरी को दिल में पूरी तरह से उतार दिया तब उस दिल का करीब–करीब संहार हो चुका था। मैं फिर भी अविश्वसनीय रूप से गर्व से फूली नहीं समा रही थी। दिल का अन्दरूनी हिस्सा सपने जैसे लग रहा था। खून के थक्कों, रक्त वाहिकाओं, कड़े अस्थिबंधों और मोटी दीवारों से भरा हुआ। इस बात पर भरोसा करना बहुत मुश्किल था कि इतनी साधारण–सी दिखने वाली कोई चीज इतने असाधारण रूप से जटिल उद्देश्य को कैसे पूरा कर पाती है।

एक ऐसी लड़की के लिए जो कुछ हफ्तों पहले तक किसी खुले हुए दिल के आसपास भी खुद को खड़ा हुआ पाने की कल्पना नहीं कर सकती थी, अब एक दिल को खुद खोलना और उसके अन्दर ताक–झाँक भी करना, यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि थी, और यह हृदयरोग विशेषज्ञ बनने की कल्पना की दिशा में मील का पहला पत्थर प्रतीत हुई।

मेरी जीवविज्ञान की शिक्षिका तो बहुत अद्‌भुत हैं, और रक्त परिसंचरण तंत्र भी बहुत रोचक प्रतीत होता है, पर दिल को खोलना और उसे अच्छी तरह से देखना लगभग दूसरी ही दुनिया का अनुभव था जिसकी जगह मुझे नहीं लगता कोई और चीज ले सकती है। सिर्फ एक मेरी शिक्षिका जैसी अद्‌भुत शिक्षिका ही थीं जो कर्तव्य की पुकार से आगे जाकर इतनी मेहनत करके वे दिल ले आईं। वे आसानी से अध्याय को पारम्परिक ढंग, यानी पाठ्य–पुस्तक में से पढ़ाकर, समाप्त कर सकती थीं, लेकिन वे एक कदम आगे गईं और मुझे और मेरे सभी मित्रों को जीवन में एकबारगी आने वाला अनुभव दिलाया। मुझे याद नहीं है कि मैंने कभी अपनी कक्षा को किसी अवधारणा में इतना दिलचस्पी लेता हुआ पाया जितना उस दिन प्रयोगशाला में। यह दिखाता है कि एक छोटी–सी पहल भी बहुत दूर तक जा सकती है।

अनन्या रामगोपाल, *कक्षा 9, इनवैन्चर अकैडमी। उनसे ananya.ramgopal@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।* ***अनुवाद*** *: भरत त्रिपाठी*